# अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद

कार्यालय - युवालोक, जैन वि-व भारती, लाडनूं (राज.)

म.उंपस रू जमतंचंदजीउमकपं/लींववण्बवण्पद

## राग पर विराग का अंकुश होना चाहिए

**- युवाचार्य श्री महाश्रमण**

**बीदासर, 20 जनवरी, 2009।**

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि साधुत्व को स्वीकार करने वाले कुछ व्यक्ति उत्कर्ष को प्राप्त कर लेते हैं और कुछ गृहस्थ जैसा आचरण करने लग जाते हैं। जिसमें अर्न्तमुखत का विकास नहीं होता वह उत्कर्ष को प्राप्त नहीं कर सकता। विघ्न बाधाओं को सहन नहीं कर सकने वाला साधु गृहस्थ की शरण में चला जाता है।

उन्होंने तेरापंथ भवन के समवसरण में उपस्थित जनमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि जब तक भीतर में साधुता प्रतिष्ठित नहीं होगी तब तक सम्मान, पूजा कितनी ही मिल जाये पर कल्याण संभव नहीं है। जो विषयों का आस्वाद लेने वाला है उसमें साधुता की कमी है। उन्होंने कहा कि राग संसार को चलाने वाला है, पर राग पर विराग का अंकुश भी होना चाहिए। भोग पर योग का और मनोरंजन पर आत्मरंजन का अंकुश जरूरी है। जब ऐसा होगा तो जीवन शैली संतुलित बन जायेगी। केवल राग होगा केवल भोग होगा तो दुःख को आमंत्रण देने वाला होगा। उन्होंने कहा कि त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

युवाचार्य महाश्रमण ने ज्ञान के साथ सदाचार की शिक्षा को आवश्यक बताते हुए कहा कि समाज और देश का भविष्य भावी पीढी है। उनके भीतर सदाचार, नैतिकता के प्रति निष्ठा जागृत की जायेगी तो वे भविष्य में देश के कर्णधर बन सकेंगे।

उन्होंने पढाई की पाठशाला और पिटाई की पाठशाला का उल्लेख करते हुए कहा कि आलस्य को दूर करने के लिए दण्ड का विधान किया गया है, पर उसमें विवेक जरूरी है। उन्होंने कहा कि बाल पीढी में अच्छे संस्कार आएं यह शिक्षक का कर्त्तव्य है। अज्ञान के अंधकार को दूर करने वाला गुरु होता है। शिक्षक बालपीढी में अज्ञान के अंधकार को दूर करने के साथ असदाचार की दुर्गंध न रहे, ऐसा प्रयास करें।

## संस्औत भाषण प्रतियोगिता का शुभारंभ

आज कार्यक्रम में साधु-साध्वियों की संस्औत भाषण प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में आयोजित होगी। इसमें अत्रुटिपूर्ण प्रस्तुति देने वाले साधु-साध्वियों को आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा पुरस्औत किया जायेगा। प्रथम चरण में साध्वी कमलश्रीजी, साध्वी चंद्रिका श्री, साध्वी तन्मयप्रभा के द्वारा संस्औत में भाषण की प्रस्तुति दी गई।

**- अशोक सियोल**

9982903770